उलट-फेर

[कुछ बर्तनों के गिरकर टूटने की आवाज, साथ ही बेगम साहबा चीखती हैं।]

पत्नी—अरे क्या तोड़ा, यह क्या चीज गिरी ? सत्यानासी लगा रखी है इन कम्बख्तों ने।

पति—अब बोलता क्यों नहीं रहीम ? यह आखिर क्यों मर गया, बोलता क्यों नहीं ?

पत्नी—और यह नसीबन कहाँ मर रही। दोनों को जैसे साँप सूँघ गया हो।

पति—[गुस्से में] रहीम, ओ रहीम के बच्चे ! [रहीम आता है।]

रहीम—सरकार वह किश्ती हाथ से छूट गई, [नसीबन आती है।]

नसीबन—वह मुई किश्ती का कुण्डा टूटा हुआ तो था ही, अलग हो गया।

पत्नी—तो क्या यह चाय का सेट भी टूट गया ?

पति—अब बोलता क्यों नहीं ? टूट गया ना चाय का सेट ?

नसीबन—सेट पूरा थोड़ी ही टूटा है, बस केतली और दूधदानी।

रहीम—और दो प्यालियाँ।

पत्नी—तो और रह ही क्या गया ? सचमुच तबाही डाल रखी है तुम दोनों मियाँ-बीवी ने।

पति—तबाही तो खैर इस घर को घेरे हुए है। मैं तो चौंधिया के रह गया हूँ कि होने वाला क्या है। मुक़द्दमा जीता-जिताया हर गया। घर से खबर आई है कि चोरी हो गई। नौकरी अलग गड़बड़ हो रही है और यहाँ इन नमक हरामों का यह हाल है।

पत्नी—सचमुच आँखों पर चर्बी छा गई है परेशानी में परेशानी, पैदा करते हैं। क्या खूबसूरत सेट था ! मैंने कलकत्ता से मँगाया था किस अरमान के साथ !

पति—दूर हो जाओ मेरे सामने से नहीं तो मैं अपना सर पीट लूँगा, या तुम दोनों का मुँह नोच लूँगा। दूर हो यहाँ से।

पत्नी—मुए कामचोर निवाला हाज़िर और यह नसीबन तो और भी मुई अंधी है।

रहीम—नहीं सरकार, ख़ता तो मेरी है।

नसीबन—मैं होती तो मुझसे भी टूटता। किश्ती का कुण्डा ही अलग था, इसमें मेरी और तुम्हारी ख़ता क्या।

पति—इसमें तुम दोनों की ख़ता नहीं, ख़ता है असल में मेरे मुक़द्दर की। हर तरफ़ से मेरे लिए आजकल तबाही ही तबाही है। और अब तो मैं किसी को मुलाज़िम रखने के क़ाबिल ही नहीं हूँ।

पत्नी—अच्छा अब जाओ, ये मनहूस सूरतें निकल हटो यहाँ से।

[रहीम और नसीबन जाते हैं।]

पति—अक़्ल हैरान है कि आख़िर होगा क्या।

पत्नी—तो क्या इस तरह परेशान होने से काम बन जायेगा? जिस तरह वह वक़्त नहीं रहा, यह वक़्त भी न रहेगा। उसे देते कोई देर लगती है? और जो वह लाटरी का टिकट ही निकल आये।

पति—निकल आये तो क्या कहने हैं, दलिद्दर धुल जायें। मगर ऐसी क़िस्मत कहाँ है? सोने को छू लूँ आजकल तो वह भी मिट्टी हो जाये। अब देखो ना जमीलख़ाँ मरहूम को अपना चचा साबित कर ही दिया था।

पत्नी—तो आख़िर फिर यह हुआ क्या कि वह बना-बनाया खेल बिगड़ गया।

पती—भई, वह उनके असली भतीजे जो अर्से से लापता थे, न जाने कहाँ से आ मरे और उन्होंने साबित कर दिया कि मैं शेख़ हूँ और वह पठान थे लिहाज़ा वह मेरे चचा नहीं हो सकते थे।

पत्नी—सचमुच ये मुक़द्दर के खेल हैं, क्या खबर थी कि वह कमबख्त इस तरह आ टपकेंगे।

पति—इस मुक़द्दमे की वजह से दफ़्तर से ग़ैरहाज़िरियाँ कीं। ख्याल था कि इतनी बड़ी जायदाद मिल जाएगी तो जिस तनख्वाह का मुलाज़िम हूँ उस तनख्वाह के मुलाज़िम खुद रखा करूँगा।

पत्नी—घर की सारी पूँजी मुए मुक़द्दमे में अलग फेंकी और न लेना एक न देना दो।

पति—जब परेशानी आती है तो चारों तरफ़ से आती है। अब घर पर चोरी हुई है तो सुना है कि झाड़ू दे गये ये चोर। एक चीज़ नहीं छोड़ी।

पत्नी—वाह री क़िस्मत! समझे थे कि दिन ही फिर जायेंगे मगर यहाँ उल्टी आँतें गले पड़ीं कि जो कुछ था वह भी खो बैठे।

पति—आजकल कुछ नहूसत इस घर पर छाई हुई है। जिसके घर में दो-दो नौकर उसके घर की यह हालत ज़रा देखो। तुम्हें खुदा की क़सम ज़रा देखो वह मेरा नया जूता पड़ा हुआ, हज़ारों मन गर्द होगी उस पर।

पत्नी—कहीं भी नहीं, वह तो रहीम का जूता है। तुम्हारा ही ऐसा जूता लाट साहब भी तो लाए थे।

पति—खूब, खूब! अब यह रियासत छाई है कि पाँच-पाँच रुपये के जूते पहने हैं।

पत्नी—अरे तुम खाली जूतों को कह रहे हो, वह तो हर बात में तुम्हारी नक़ल करता है। तुमने लाटरी का टिकट खरीदा था ना तो बीवी की बालियाँ रखकर आप भी टिकट लाये थे।

पति—लाटरी का टिकट? उसने भी खरीदा है। पागल तो नहीं हो गया है?

पत्नी—ऐ उस टिकट निगोड़े मारे के तो हर वक़्त चर्चे हैं। ज़रा किसी वक्त दोनों मियाँ-बीवी की बातें तो सुनो। कल रहीम नसीबन से कह रहा था कि टिकट निकल आने दे फिर देखना कि कैसी-कैसी बालियाँ तेरे लिए बनवाता हूँ, मरी जाती है ज़रा-सी बालियों के लिए। मैं तो तुझे करनफूल भी बनवा दूँगा और बिजलियाँ भी।

पति—जी और क्या? लाटरी निकलेगी तो करनफूल और बिजलियाँ ही तो बनेंगी। इस वक़्त लाटरी की ज़रूरत है मुझको। सच कहता हूँ बेगम कि मैं तो एक मिनट भी इस शहर क्या इस मुल्क में न रहूँ। दुनिया की सियाहत करूँ, बड़े-बड़े होटलों में ठहरूँ। कभी हवाई जहाज़ पर उड़ूँ तो कभी समुन्दर के सीने पर चलूँ।

पत्नी—ऐ यह सब मुक़द्दर से होता है। लाटरी निकल आये तो सब से पहले अपनी ख़ानदानी बाप-दादा की जायदाद न छुड़वाई जाय जिसका सूद ही क़ीमत से ज्यादा हो चुका है।

पति—छोड़ो इस ज़िक्र को, मैं तो उस जायदाद को भूल ही जाना चाहता हूँ। मुक़द्दर देखो कि कभी यह मकान अपना था और अब इसका किराया देते हैं। दो-एक मकानों को छोड़कर बाक़ी सब अपने ही थे। [घंटा बजता है।] ओहो दस बज गए। वकील साहब के यहाँ जाकर कचहरी पहुँचना है और दफ़्तर तो आज भी अर्ज़ी जायेगी। यह किधर गया रहीम? [आवाज़ देता है।] रहीम, रहीम!

[रहीम दौड़ा हुआ आता है।]

रहीम—सरकार!

पति—जूता साफ़ करके दो जल्दी और टोपी पर ब्रुश फेरो। दस बज गये और आप हैं कि पता ही नहीं।

रहीम—सरकार, बाइसिकल साफ़ कर रहा था, ख़ाक-धूल में अटी पड़ी थी।

पति—अच्छा जूता लाओ जल्दी। किसी बात का होश ही नहीं

है। बाइसिकल साफ़ करने का वक़्त यह था, रात से क्या मौत आ रही थी तुझको ?

रहीम—हुज़ूर मौत तो······।

पति—ख़ामोश ! मैं देख रहा हूँ कि बड़ी रियासत आप पर छाती चली जा रही है। पाँच-पाँच रुपये के जूते ख़रीदे जाते हैं अब तो लाटरी का टिकट लिया गया है बीवी की बालियाँ रखकर। यह दिमाग़ पर जो गर्मी चढ़ी हुई है ना दो मिनट में उतार दूँगा। समझा कि नहीं ? बाल मुँडवाओ आज तुम।

रहीम—जूता हुज़ूर।

पति—यह जूता साफ़ हुआ है। कब से इस पर पालिश नहीं हुई है। बोल, अरे मैं पूछता हूँ कि कब से इस पर पालिश नहीं हुई। नया जूता और घूस की शक्ल बनाकर रख दिया है। उठाता है इसे कि अब मैं उठूँ ? [नसीबन दौड़ती हुई आती है।]

नसीबन—उठा के जल्दी से साफ़ कर दो ना।

पति—आप आई हैं वहाँ से मियाँ की पुश्त-पनाही करने। क्यों री यह तूने टिकट लेने के लिए बालियाँ क्यों दी थीं अपनी और यह पाँच-पाँच रुपए के जूते क्यों पहनता है, क्यों ?

नसीबन—क्या करूँ सरकार।

पति—आज इसका सर मुँडेगा। फैशन तो आपका देखिए उल्टी माँग निकाली जाती है। भूल गये वह दिन कि मक्खियाँ भिनकते हुए आये थे—फ़ाक़ेमस्त, और अब दिमाग़ ख़राब हो गया है ?

पत्नी—नसीबन, खड़ी खड़ी क्या कर रही हो ? लपक के पान-दान उठा दो, एकाध गिलोरी हीं बना दूँ।

पति—यह खड़ी हुई देख रही हैं अपने शौहर नामदार की छब कि कैसी बाँकी-तिरछी माँग है। ज़रा आपकी आँखों में सुरमा तो देखिये,

मालूम होता है पूरी बरेली आँखों में ठूँस ली है। बड़े रँगीले होते जाते हैं आप।

पत्नी—ख़ैर तुम जूता-वूता पहनो, कचहरी को देर हो रही है।

पति—नहीं जी लात का आदमी कभी बात से नहीं मानता। आप इन दोनों पर सख्ती रखिये अब। मुलाहज़ा हो यह टोपी साफ़ की है। देख इसे, सूझा यह क्या है?

रहीम—रह गया होगा धब्बा······।

पति—धब्बे का बच्चा! हाथ साफ़ कर पहले अपने। जूते के हाथों से टोपी लेने चला। [नसीबन आती है।]

नसीबन—लाइये मियाँ साफ़ कर दूँ।

पत्नी—तुम पानदान तो इधर दो मुझको।

[नसीबन पानदान रख देती है। पानदान के खोले जाने की आवाज़]

पति—कभी मियाँ-बीवी को साथ-साथ एक घर में नौकर न रखे। ये जो इन दोनों के चोंचले हैं इसी से मैं जलता हूँ। मियाँ को कुछ कहा तो बीवी सीने पर बन गईं, बीवी की कोई बात होती है तो मियाँ तरफ़दारी को मौजूद। ख़बरदार जो तुम एक-दूसरे की बातों में कभी बोले।

पत्नी—हाँ, यह तो हुआ ही करता है। रोज यही देखती हूँ मैं तो।

पति—बस इसका इलाज यह है कि ये दोनों आपस में पर्दा करें। या बस एक को रखो और एक का हिसाब साफ़ कर दो।

पत्नी—अच्छा ख़ैर, लो पान लो तुम और जाओ देर हो रही है।

पति—कचहरी से लौट कर आऊँ तो कमरा साफ़ मिले मुझको, कान खोल कर सुन लो।

[पति चला जाता है।]

ऐलान

जफ़र यानी मियाँ और जमीला यानी बीवी दोनों की यह राय ठीक थी कि तमाम बातें क़िस्मत से ही हुआ करती हैं। उन का जीता-जिताया मुकद्दमा मुक़द्दर ने हरा दिया। मुकद्दमा भी गया और अपने साथ नौकरी को भी ले गया। घर की चोरी ने रही-सही पूँजी भी साफ़ कर दी। मगर जमीला का यह भी कहना ठीक था कि उसे देते देर नहीं लगती चुनांचे रहीम—पाँच रुपये महीना और का नौकर, रहीम, जिसने बीवी की बालियाँ बेचकर लाटरी का टिकट ख़रीदा था, लाटरी मिल जाने से आज लखपति है। पढ़ा न लिखा, जिसे जूता साफ़ करने की तमीज़ न थी आज बड़ा आदमी है और ख़ुद उसने हक्क़े-नमकख़्वारी अदा करने के लिए कहिए या परवरिश की नज़र से ज़फ़र को अपना मुख़्तार बना रखा है। मगर इस उलट-फेर ने नक़्शा ही बदल दिया है। वह अब सरदार अब्दुर्रहीम ख़ाँ है। और ज़फ़र ने ख़ुद अपने लिए प्रायवेट सेक्रेटरी का ओहदा पसन्द किया है।

[हुक्क़ा पीते हुए सरदार अब्दुर्रहीम ख़ाँ आवाज़ देते हैं।]

रहीम—अरे कोई है! सब मर गये, सब को साँप सूँघ गया। मैंने कहा, सिकत्तर साहब, ऐजी सिकत्तर साहब हो तो!

पति—मैं हाज़िर हूँ, कमिश्नर साहब के ख़त का जवाब भिजवा रहा था।

रहीम—कौन ख़त, और यह कमिश्नर कौन? हमें भी तो कुछ बताया करो साहब।

पति—आपने जो अस्पताल के लिए चन्दा भिजवाया था, उसका उन्होंने शुक्रिया अदा किया था कमिश्नर साहब ने अब उनके ख़त का जवाब आपकी तरफ़ से दिया जा रहा है।

रहीम—वह तो ठीक है मगर, ज़रा यह तो देखो हुक़्क़े पर आग

तक नहीं है। इतने नौकर-चाकर और ठण्डा हुक्क़ा पी रहा हूँ। भई, तुम्हारे यहाँ तो दो ही नौकर थे एक मैं और एक वह, क्या नाम रखा हैं घरवाली का तुमने ?

पति —जी, वह बेगम नसीबआरा।

रहीम—हाँ तो अब बोलो, कभी ऐसी बात हुई कि ठण्डा हुक्क़ा तुमको मिला हो और अगर कभी ऐसा होता तो तुम कैसा बकते हम दोनों पर। बाल मुँडवा देते, मियाँ-बीवी में पर्दा करवा देते। और जाने क्या-क्या करते।

पति—जी वह मैं अभी कहता हूँ किसी से कि यहीं हाज़िर रहे।

रहीम—हाजिर-वाजिर तो हम जानते नहीं, हमारा काम ठीक न होगा तो हम सिकत्तर साहब, गर्दन बस तुम्हारी दबायेंगे। यह समझलो।

पति—मगर अब उम्मीद है कि इसका मौक़ा ही न आयेगा। [आवाज देता है।] देखो चमन, ग़फ़ूर, करीम चलो, इधर आओ।

[तीनों आदमियों के आने की चाप]

पति—तुम तीनों की बारी-बारी ड्यूटी गोल कमरे के बरामदे में रहेगी। जिस वक़्त घण्टी बजे फ़ौरन हाज़िर हो।

रहीम—कौन सी घण्टी ? अच्छा यह घण्टी ! [घण्टी बजा देता है।] और यह भी सिकत्तर साहब कह दो कि ये लोग हमारे साथ ताश खेला करेंगे।

पति—अच्छा तुम लोग जाओ। [आदमी चले जाते हैं।]

रहीम—यह क्या, वह ताश वाली कही भी नहीं बात।

पति—मैंने जानकर नहीं कही। उसके मुताल्लिक़ मुझे अर्ज़ यह करना है कि आपके लिए यह मुनासिब नहीं है कि आप इन नौकरों के साथ ताश खेलें। आपको ख़ुदा ने दौलत दी है। आपके लिए मैं कोशिश कर रहा हूँ कि आपका मरतबा और इज्ज़त भी बढ़े।

रहीम—अरे यार कहाँ से इज्जत और मरतबा लेके चला है। दिन भर बैठे-बैठे उँघाई आने लगती है।

पति—गुस्ताखी माफ़, मैं तो कल से इस फ़िक्र में था कि मौक़ा मिले तो कुछ अर्ज करूँ। कल मोटर पर जब हवाखोरी के लिए बेगम साहबा तशरीफ़ ले गई हैं तो बाजार में मोटर रुकवा कर चाट नोश फ़रमाई। मेरी बीवी ने दबी जबान से मना भी किया···

रहीम—हाँ वह नहीं मानतीं और क्यों मानतीं? बहुत मान चुके हम दोनों तुम दोनों की बातें। औंधी-सौंधी हर बात मानी। तुम्हारे गुर्रे-डब्बे सहे। सिकत्तर साहब, अब यह नहीं हो सकता। सरदार अब्दुर्रहीम खाँ की बेगम और सरदार अब्दुर्रहीम खाँ अब तुम्हारे नौकर नहीं हैं। समझे कि नहीं?

[दरवाजा खुलता है और बेगम नसीब आरा आती हैं।]

नसीबन—क्या बात है? मेरा नाम सिकत्तर साहब ने कैसे लिया था?

रहीम—कहते हैं कि बेगम साहब ने मोटर पर बैठकर काबुली कचालू बजार में क्यों खाये थे?

नसीबन—यह जमीला बुआ ने आकर लगाई-बुझाई की होगी। देखो मैंने कह दिया है कि यह लगाई-बुझाई मुझे पसन्द नहीं। समझे कि नहीं? मुझे देखो कि जमीला बुआ, जमीला बुआ करते हुए जबान सूखती है और यह इत्ती सी बात आकर लगायें, वाह! ऐ काबुली कचालू खाये तो किसी का क्या किया। अल्ला ने पैसा दिया है, खाते हैं जो जलता है जले।

[पत्नी आती है।]

रहीम—क्यों जी जमीला बुआ यह क्या बात है? तुम दोनों मियाँ-बीवी ने तो दौलत जब मुझे मिली है यह कहा था कि हम अपना जमाला

भूलकर रहेंगे। मगर साँप जल गया, नहीं जी रस्सी जल गई और बल नहीं गये।

पत्नी—मैं समझी नहीं कि आप क्या फ़रमाते हैं ?

पति—वही कल की चाट का जिक्र था।

रहीम—देखो सिकत्तर साहब, तुम नहीं बोल सकते। यह बात जैसी तुमको बुरी लगती थी, मुझको भी बुरी लगती है कि बीवी की बात में मियाँ बोले।

पत्नी—मैं अर्ज़ करूँ, मैंने बेगम साहबा से यही कहा था कि खुदा ने जो रुतबा आपको दिया है, उसको देखते हुए यह मुनासिब नहीं कि आप सरे बाज़ार चाट नोश फ़र्मायें।

नसीबन—मगर इत्ती सी बात तुमने मियाँ से अपने क्यों लगाई ? मैं खाऊँगी चाट और इस जिद में रोज खाऊँगी। वाह !

रहीम—ठीक तो कहती हैं बेगम हमारी। अब कोई हम तुम्हारा दिया खाते हैं या तुम्हारे ताबेदार हैं ? आख़िर तुमने समझा क्या है ?

पति—मगर मैं इस वक़्त इस बात को साफ़ कर लेना चाहता हूँ कि···

रहीम—कुछ साफ-वाफ नहीं होगा। यह काम मैं तुम से नहीं ले सकता इसीलिए और नौकर-चाकर हैं। मैं ऐसा नमकहराम थोड़ी हूँ कि जिसका नमक खाया है उससे सफाई का काम लूँ।

पति—यह तो आपकी नवाज़िश है कि आप यह ख़याल फ़रमाते हैं मगर मेरा मतलब यह था कि मैं एक बात तै कर लेना चाहता हूँ। आपने खुद पहले ही दिन यह कह दिया था कि बड़े आदमियों के ढंग तुम मुझको बताना। इसलिए हम दोनों इस तरह बात-बात पर टोकते हैं। अगर आप मना करदें तो हम ख़ामोश हो जायेंगे।

नसीबन—यह तो ठीक है, मगर अब क्या तुम लोग हलक़ के दर-बान बनके बैठोगे ?

रहीम—कहने दो सिकत्तर साहब को बात यह ठीक कह रहे हैं कुछ...

पति—मेरा मतलब यह है कि मुलाज़िम को बाजार भेजकर आप जितनी चाहें चाट मँगालें, कोठी पर चाट वाले को बुलालें, आपको ताश खेलने का शौक़ है तो मैं कुछ मुअज़्ज़िज़ लोगों को बुलाये देता हूँ। मगर आपको अपनी बड़ाई का ख़याल करना ही पड़ेगा।

रहीम—तो क्या हम ख़याल नहीं करते। गद्देदार कुर्सी पर दिन भर बैठे रहते हैं। पतंग लूटे हुए महीनों हो गये, मगर एक दफा भी लंगर नहीं चलाया। डिप्टी साहब का नौकर अच्छन कई दफा आया मगर तुमने रोक दिया तो उससे भी नहीं मिले। क्या अपना यार था जब उससे रुपया-धेली कर्ज माँगा, उसने बराबर दिया। अभी उसकी अठन्नी मुझ पर बाकी भी है।

पति—अठन्नी की जगह मैं उसे सौ रुपये का नोट भिजवाये देता हूँ। मगर अब वह आपका दोस्त कैसे हो सकता है ? अब तो डिप्टी साहब से आपकी दोस्ती हो सकती है।

रहीम—ना बाबा, डिप्टी साहब से मेरा दम निकलता है। एक बार मैं और अच्छन पत्ते खेल रहे थे, यही माँग पत्ता, तो भाई वह दौड़े हण्टर लेके। वह दिन और आज का दिन मैंने तो सामना किया नहीं उनका।

नसीबन—कल डिप्टी साहब की बीवी ने मुझे भी बुलाया था, मगर मैं तो गई नहीं। इन जमीला बुआ के साथ एक दफा गई थी तो झूठा खाना मिला था मुझे। मैं नहीं जाती ऐसी के यहाँ।

पत्नी—आपकी भी क्या बातें है ! वह बात जब की थी और अब ख़ुदा ने आपको लखपति बना दिया है।

पति—मेरे दिल में यह कई मरतबा ख़याल आया कि बेगम साह

को यह कुछ पढ़ाना शुरू कर दें। और इधर आप भी कुछ मेहनत करें। अब आपका लिख-पढ़ जाना जितना जरूरी है उतनी कोई बात जरूरी नहीं।

रहीम—हाँ यह बात मानी। क्यों बेगम, अरे लिख-पढ़ जायेंगे तो लिखना-पढ़ना काम ही आयेगा कभी-न-कभी। अब जो कुछ यह खतों में लिखते हैं उस पर वही लिख देता हूँ जो उस दिन इन्होंने दिन भर लिखना सिखाया है।

पति—हाँ, अब आप ही मुलाहज़ा फ़रमाइये कि दस्तखत करना आपको किस क़दर मुसीबत से सिखाया है। इतने बड़े आदमी के लिए इस क़दर अनपढ़ होना बहुत बुरा है।

नसीबन—अरे तो क्या इनको किसी की नौकरी करना है। और खैर वह तो मैं क्या करूँगी लिख-पढ़ कर।

पत्नी—परसों आप ही से जो ठकुरानी साहबा ने पूछा मिजाज शरीफ़ तो आप लगीं मेरा मुँह देखने।

पति—यही नहीं, गर्ल्स स्कूल से आज ही खत आया है कि बेगम साहबा उनके सालाना जलसे की सदारत करें।

रहीम—हाँजी लिखना-पढ़ना बहुत अच्छी बात है। तुम तो सिकत्तर साहब किताब मँगालो हम दोनों के लिए। मैं भी पढ़ूँ और यह भी। अरे हाँ, इतने बड़े सरदार अब्दुर्रहीम खाँ और इतनी बड़ी बेगम क्या नाम रखा है इनका ?

पति—बेगम नसीब आरा।

रहीम—तो इतनी बड़ी बेगम नसीब आरा और जानते नहीं अलिफ़ के नाम लट्ठ।

पति—इसीलिए मैंने अर्ज किया कुछ दिनों की मेहनत है, उसके बाद न मुझे सर खपाना पड़ेगा, न आप बात-बात पर मुँह देखेंगे।

रहीम—अच्छा चलोजी दो सौ रुपये तो सिकत्तर होने की तन-

ख्वाह थी ही सौ रुपये इस मुल्लागीरी के और इन उस्तानी के भी सौ रुपये।

पति—यह सब परवरिश है।

रहीम—परवरिश क्या सिकत्तर साहब, हम दोनों ने भी तो आपका नमक खाया है।

नसीबन—अच्छा मैंने कहा सुनते हो जी? मुझे तुमसे कुछ कहना है।

पति—तो अब हम इजाजत चाहते हैं।

रहीम—अच्छा, मगर भाई सिकत्तर साहब, जरा इस हुक़्क़े-बुक़्क़े की फ़िक्र रखा करो। अब देखो ना यह जल गया मैं बैठा हूँ।

पति—तो घण्टी बजाइये ना। लीजिये मैं खिदमतगार को बुलाये देता हूँ। [घण्टी बजाता है, साथ ही एक आदमी आता है] जाओ, पेचवान ताजा करके लगाओ। [आदमी चला जाता है।] तो मैं इजाज़त चाहता हूँ, आदाब अर्ज़!

रहीम—सलाम भाई, सलाम। [मियाँ और बीवी दोनों कमरे के बाहर जाते हैं। क़दमों की चाप दूर तक जाती है। उसकी बीवी कहती है।]

पत्नी—सचमुच बेइज्जती की हद है।

पति—[ठण्डी साँस भर कर] कायापलट। जो कुछ भी मुक़द्दर दिखाये।

पत्नी—इससे तो फ़ाक़े करना अच्छा था।

पति—तुम तो हो पागल। यह तो क़ुदरत ने एक तमाशा दिखाया है। मुझे तो गुस्सा नहीं बल्कि हँसी आती है इन दोनों की बातों पर। अब कल से यह रद है कि कोट-पतलून पहनेंगे।

पत्नी—मगर मैं तो यही चाहती हूँ कि जो कुछ क़िस्मत में लिखा

है वह होगा, मगर जिनसे हाथ जुड़वाये हैं उनके आगे हाथ नहीं जोड़े जाते।

पति—तुम कहती ठीक हो तुम से पहले बार-बार मेरा भी यही इरादा हुआ। मगर दो सौ रुपये तनख्वाह अब सौ तुम्हारे और तीन सौ मेरे कर दिये हैं। गोया चार सौ रुपये महीना कौन देगा मुझे? यह तनख्वाह और फिर यह सियाह-सफेद का मालिक मैं हूँ। अलबत्ता दिल पर जरा जब्त करना पड़ता है। अब तुम ही समझो रहीम में अक्ल कहाँ से आ सकती है और वह लखपति होकर भी असलियत को कैसे भूल सकता है?

पत्नी—इस मोटी नसीबन को तो देखो। सचमुच रानी बन गई है रानी।

पति—तो इसमें कोई शक भी क्या! क़िस्मत ने उसे वाक़ई रानी बना दिया है। उसे रानी बनने का हक़ है।

पत्नी—आज सवेरे से फूली हुई हैं। कहने लगीं कि मेरे सर की जुएँ देख दो। मैंने टोका कि यह बात फिर आपने छोटे लोगों की-सी की। बस ख़फ़ा हो गई।

[रहीम की आवाज। क़दमों की चाप, रहीम खुद ही पुकारता हुआ आता है।]

रहीम—किधर गये, अरे सिकत्तर साहब कहाँ हैं?

पति—हाज़िर हूँ मैं।

रहीम—अच्छा यह बताइये कि यह क्या बात कि हमारी बेगम ने इन जमीला बुआ से कहा, जरा हमारा सर झाड़ दो। तो इन्होंने कहा कि छोटे आदमियों की बात है। वह किससे कहती?

पति—जी हाँ, यह है तो छोटे आदमियों की बात जरूर। बड़े आदमियों की बेगमों को सर की जुएँ नहीं दिखलाना चाहिये।

रहीम—चाहे जुएँ पड़ी रहें, क्यों जी? यह क्या कहा तुमने?

पति—यह कहा मैंने कि या तो आप दोनों हम दोनों को मना कर दें कि आपके मामलात में न बोलें। या हम लोग जो मुनासिब समझेंगे आपकी भलाई के लिए आपसे कहेंगे। उसको सुनिये और वैसा ही कीजिये।

रहीम—भाई मियाँ, नौकरी तो इस तरह नहीं होती कि जो तुम कहो वह किया जाये। नौकरी होती है उस तरह जिस तरह हमने तुम्हारी नौकरी की है कि दिन को दिन और रात को रात नहीं जाना। तुम्हारी दोनों की हर बात सुनी, गालियाँ खाईं और मियाँ तुम मारने तक को दौड़े हो मुझ पर।

पति—मगर मैं या मेरी बीवी आप ही दोनों की भलाई के लिए हर बात बताते हैं कि दुनिया आप पर हँसे नहीं।

नसीबन—अजी बस रहने भी दो। मुझसे तो पैर तक दबवाये हैं आधी-आधी रात तक। चार रुपल्ली और पाव भर अनाज का नौकर रखा था और दिन भर कोल्हू के बैल की तरह हम दोनों जुते रहते थे। फिर गालियाँ और कोसने अलग खाते थे।

पति—तो क्या आपका मतलब यह है कि वैसा ही सलूक आप दोनों हम दोनों के साथ चाहती हैं? अगर यह मतलब है तो यह लीजिये ये रहीं तिजोरी की कुंजियाँ! [कुंजियाँ फेंक देता है।] आप अपने घर खुश, हम अपने घर खुश।

रहीम—अरे, अरे, अरे सिकत्तर साहब! मियाँ हुजूर सिकत्तर साहब, जरा ग़म खाओ।

पत्नी—जी बस ग़म खाना हो चुका। आप दोनों को लुटेरों की तरह लूटते और ज्यों-का-त्यों बनाये रखते तो आप खुश रह सकते थे।

[चली जाती है।]

नसीबन—तो चलीं कहाँ? सुनो तो, बेगम साहब। ऐ है!

पति—ठहरो जी [illegible] इनका सारा हिसाब

हूँ और इनको बतादूँ कि एक पाई भी इधर की उधर नहीं हुई है। उसके बाद ये जानें और इनका काम।

नसीबन—आप तो बेकार के लिए बिगड़ गये मियाँ, वह सिकत्तर साहब।

रहीम—चुप, वह तो सब तेरी ही वजह से हुआ है। उन्होंने कभी हमको निकाला नहीं और आज हम उनको जाने दें।

पति—खैर यह देखिये, २६ अक्तूबर को रुपया आया था। यह आमद दर्ज है, और·········।

रहीम—मैं कुछ नहीं देखता। जिन्दगी भर क़दमों पर गिर चुका हूँ। आज फिर कदमों पर गिरता हूँ।

पति—अरे, अरे, अरे यह आप क्या कर रहे हैं ?

रहीम—नहीं, आपको जाने नहीं देंगे। और उसको भी माफ़ कर दीजिये, बेवकूफ़ है। मैं पैर छोड़ूँगा नहीं जब तक············।

पति—ठहरिये तो बात तो सुनिये मेरी। लाहौल वला क़ूवत ! अरे साहब············।

रहीम—कुछ नहीं बस हँस दीजिये मियाँ, हँस दीजिये। वह क्या नाम कि सिकत्तर साहब।

नसीबन—मैं जब नौकरी छोड़के जा रही थी तो आपने गले से लगाया था। अब मैं नहीं जाने देती। मेरी बीबी, वह मेरी जमीला बुआ।

पत्नी—अच्छा छोड़िये तो सही।

पति—खुदा के लिए आप उठिये। ~~अच्छा साहब नहीं~~ जाते, नहीं जाते, नहीं जाते। खुदा के लिए उठिये।

रहीम—हाँ यह बात !

[सब हँसते हैं]